नईदुनिया

भारतीय छात्रों की मौत पर बोले शिक्षाविद्, सतर्क रहने की जरूरत, अब तक नहीं मिला कोई पैटर्न

वॉशिंगटन।

भारतीय मूल के छात्रों और भारत के लगभग 11 विद्यार्थियों की मौत की खबर के बाद उनके अभिभावक के माथे पर चिंता की रेखाएं खिंची हुई हैं। हाल ही में एक भारतीय-अमेरिकी शिक्षाविद् ने अभिभावकों की चिंता शांत करते हुए कहा कि अमेरिका भारत के विद्यार्थियों को अच्छा वातावरण दे रहा है। उन्होंने कहा कि अब तक हुई घटनाएं चिंताजनक हैं लेकिन इन मौतों का कोई विशेष पैटर्न नहीं है।

वर्जीनिया में जार्ज मेसन यूनिविर्सिटी में स्कूल ऑफ कंप्यूटिंग के डिवीजनल डीन गुरदीप सिंह ने इस बात पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि यह बेहद दुखद है कि इन घटनाओं में लगातार वृद्धि हो रही है। एक माता-पिता के तौर पर चिंतित होना वाजिब है। लेकिन इन घटनाओं का अब तक कोई भी एक साथ पैटर्न नहीं मिला है। उन्होंने कहा कि चिंता की बात तब होती जब ये घटनाएं किसी विशेष विश्वविद्यालय में लगातार होती। वे बताते हैं कि भारतीय राजनयिक मिशनों ने सक्रिय होकर भारतीय विद्यार्थियों से मिलना शुरू कर दिया है। छात्र संघों से बातचीत शुरू भी कर दी है। हर किसी को सतर्क रहने की आवश्यकता है।

संवेदनशील इलाकों पर सतर्क रहना आवश्यक - गुरदीप सिंह ने कहा कि उन इलाकों पर सतर्क रहने की आवश्यक है। हर शहर में कुछ ऐसे संवेदनशील इलाके होते हैं जहां अपराध दर अन्य इलाकों की तुलना में अधिक होते हैं। अमेरिका में अधिकांश परिसर विश्वविद्यालय है, जो कि सुरक्षित भी है।

तीन गुना बढ़ी है अमेरिका में भारतीय छात्रों की संख्या - इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल एजुकेशन की ओपन डोर्स रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिका में भारतीय छात्रों की संख्या सत्र 2014-2015 में 1,32,888 थी। यह संख्या वर्ष 2024 में बढ़कर 3,53,803 हो गई है। जो कि लगभग तीन गुना बढ़ी है।

11 मौत के कारणों की जांच की मांग - गैर-लाभकारी संस्था हिंदूएक्शन के कार्यकारी निदेशक उत्सव चक्रवर्ती ने इस साल 11 भारतीय छात्रों की मौत पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ महीनों में, हमारे पास पहले ही 11 मामले आ चुके हैं। वे कहते हैं कि एफबीआई का ध्यान इस ओर जाना चाहिए। वे जांच करें कि क्या कारण है इन मौतों के बीच आपस में कोई संबंध तो नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि एक समुदाय के रूप में हम वास्तव में चिंतित हैं। इन मौतों की अधिक विस्तृत जांच की आवश्यकता है। मुझे लगता है कि अमेरिकी हिंदू होने के नाते हम उम्मीद करते हैं कि कोई पैटर्न सामने न आए।

न्यूज ब्रीफ

अमेरिका ने ड्रैगन पर लगाया बड़ा आरोप, कहा- छिपकर यूक्रेनी लोगों के खिलाफ रूस की मदद कर रहा चीन

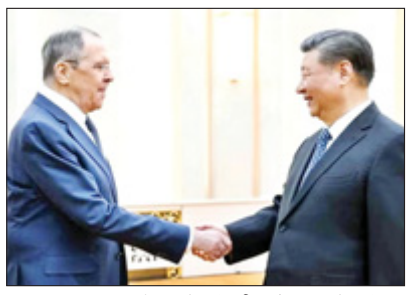

वॉशिंगटन । रूस और यूक्रेन के बीच दो साल से अधिक समय से युद्ध जारी है। इस जंग के थमने का आसार दूर-दूर तक नहीं दिख रहा है। इस बीच अमेरिका ने चीन पर आरोप लगाया है कि वह अपने शब्दों के उलट जाकर रूस की मदद कर रहा है। चीन हमेशा ही दावा करता है कि यूक्रेन-रूस युद्ध पर वह हमेशा निष्पक्ष रहा है। हालांकि, इन सबके बावजूद बीजिंग यूक्रेनी लोगों के खिलाफ मॉस्को की मदद कर रहा है। सबूतों के सामने चीन के दावे हास्यास्पद चीन जितनी तेजी से रूस की मदद कर रहा है, उतने ही तत्परता से बयानबाजी भी कर रहा। चीनी विदेश मंत्रालय के एक प्रवक्ता ने पिछले साल दावा किया था कि सेना से जुड़ी चीजों के निर्यात के लिए, चीन ने हमेशा एक विवेकपूर्ण और जिम्मेदार रवैया अपनाया है। हालांकि, इस तरह के बयान सबूतों के सामने हास्यास्पद हैं, जो कुछ और ही बयां करते हैं। मध्य पूर्व में संकट बढ़ता दिख रहा है। ईरान ने इजराइल पर हमला कर दिया, जिससे दो कट्टर दुश्मन देशों के बीच तनाव अपने चरम पर पहुंच गया है। पश्चिम एशिया में बढ़ते संकट के संकेतों के बीच कुछ सलाह दे रहे हैं कि चीन को वहां भी मध्यस्थता करने में मदद करनी चाहिए। दुनिया इस भ्रम में रहना कब बंद करेगी वाशिंगटन डीसी स्थित इंटरनेशनल रिपब्लिकन इंस्टीट्यूट में काउंटरिंग फॉरेन ऑथोरिटेरियन इन्फ्लुएंस के वरिष्ठ सलाहकार जे माइकल कोल ने टिप्पणी की। उन्होंने कहा, निश्चित रूप से चीन ने यूक्रेन के खिलाफ रूस के साथ काम नहीं किया है। यहां तक कि उसने उत्तर कोरिया का साथ भी नहीं दिया। दुनिया इस भ्रम में रहना कब बंद करेगी कि बीजिंग शांति के लिए भागीदार होगा चीन गुप्त रूप से धीरे-धीरे समर्थन बढ़ा रहा वरिष्ठ अमेरिकी अधिकारियों ने खुफिया जानकारी का खुलासा करते हुए दावा किया कि चीन रूस की सेना को फिर से खड़े होने में मदद कर रहा है। व्लादिमीर पुतिन द्वारा कीव पर हमले किए जाने के बाद चीन गुप्त रूप से धीरे-धीरे समर्थन बढ़ा रहा है। यह रूस के रक्षा औद्योगिक आधार के पुनर्निर्माण से कमियों को दूर करने में मदद कर रहा है। दरअसल, इस बात की चिंता है कि शीत युद्ध की समाप्ति के बाद से रूस अब अपने सबसे बड़े सैन्य-औद्योगिक विस्तार को प्राप्त कर रहा है। उदाहरण के लिए, अमेरिकी यूरोपीय कमान के कमांडर जनरल क्रिस कैवोली ने हाल ही में गवाही दी थी कि रूस अपनी सेना को आसानी से फिर खड़ा करने में काफी हद तक सफल रहा। वास्तव में इसकी क्षमता काफी हद तक वापस बढ़ी है। बाइडन ने की थी शी जिनपिंग से बात राष्ट्रपति जो बाइडन ने दो अप्रैल को चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग के साथ फोन पर बात की थी और इस मुद्दे को उठाया था। इस दौरान बाइडन ने रूस के रक्षा औद्योगिक आधार के लिए पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के समर्थन पर चिंता जताई थी। रूस की ताकत बढ़ाने में चीन का हाथ अमेरिकी सरकार के अधिकारियों ने अब एक बार फिर आरोप लगाया है कि रूस के रक्षा उद्योग में बढ़ोत्तरी होने पर चीन काफी हद तक जिम्मेदार है। एक उदाहरण के रूप में, जो संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप मिलकर कर सकते हैं, वो अब मॉस्को अकेला कर सकता है। रूस अब तीन गुना तोपखाने गोला-बारूद का उत्पादन करने में सक्षम है ड्रोन बनाने के लिए काम कर रहे पिछले हफ्ते, अमेरिकी अधिकारियों ने ऐसा ही कुछ खुलासा किया था जिससे साफ था कि चीन समर्थन दे रहा है। उदाहरण के लिए, चीनी और रूसी समूह रूस के अंदर संयुक्त रूप से ड्रोन बनाने के लिए काम कर रहे हैं।

ट्रंप के समर्थन ब्रिटेन की पूर्व प्रधानमंत्री लिज ट्रस, बोलीं ट्रंप ईरान और चीन के प्रति थे आक्रामक

वॉशिंगटन। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति पर इन दिनों आपराधिक मुकदमा चल रहा है। ऐसे में ब्रिटेन की

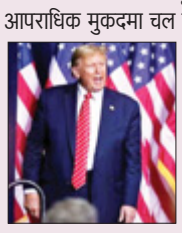

पूर्व प्रधानमंत्री लिज ट्रस ने उनका समर्थन करते हुए कहा कि अमेरिका के राष्ट्रपति जब डोनाल्ड ट्रंप थे, तब दुनिया ज्यादा सुरक्षित थी। डोनाल्ड ट्रंप के समर्थन में अब ब्रिटेन की पूर्व प्रधानमंत्री ने बयान देते हुए कहा है कि डोनाल्ड ट्रंप के नेतृत्व में दुनिया अधिक सुरक्षित थी। उन्होंने कहा कि मैं ये नहीं कह रही कि उनकी हर बात से मैं सहमत हूं, लेकिन उनका रवैया चीन और ईरान के प्रति आक्रामक था। उनके समर्थन में देश और दुनिया ज्यादा सुरक्षित थी। ब्रिटेन की पूर्व प्रधानमंत्री ने डोनाल्ड ट्रंप का चुनाव के लिए समर्थन किया। उन्होंने यूक्रेन के समर्थन करने के डोनाल्ड ट्रंप के फैसले की सराहना भी की। वे बोलीं कि ट्रंप को व्हाइट हाउस में होना चाहिए। आक्रामक शासन को रोकने के लिए ट्रंप जरूरी ब्रिटेन की पूर्व प्रधानमंत्री लिज ट्रस ने कहा कि आक्रामक शासन के विस्तार को रोकने में ट्रंप अधिक प्रभावी थे। मुझे लगता है कि अगर वह 2020 में दोबारा चुने जाते तो हम एक अलग स्थिति में होते। डोनाल्ड ट्रंप पर चार आपराधिक मुकदमें 77 वर्षीय डोनाल्ड ट्रम्प अमेरिका के पहले पूर्व राष्ट्रपति हैं, जिन पर आपराधिक मुकदमा चलाया जा रहा है।

ईरान के हमले के दौरान सऊदी-जॉर्डन ने की इजराइल की मदद, यूएस ने किया सबसे ज्यादा मिसाइलें को गिराने का दावा

तेल अवीव ।

ईरान ने पिछले हफ्ते इजराइल पर सैकड़ों मिसाइलों और ड्रोन से हमला किया। इजराइल इन मिसाइलों को रोकने में कामयाब रहा, लेकिन अब इसे लेकर एक बड़ा खुलासा किया गया है। दरअसल, 13 अप्रैल को ईरान की तरफ से पहली बार इजराइल पर मिसाइल हमला किया गया था, लेकिन बताया जा रहा कि ईरान के मिसाइलों को रोकने में पड़ोसी देश सऊदी अरब और जॉर्डन ने भी अहम भूमिका निभाई थी। पिछले साल से जारी इजराइल-हमास युद्ध को लेकर दोनों देशों ने इजराइल की आलोचना की थी। अरब देश ने इजराइल को इसके लिए गंभीर परिणाम भुगतने की भी चेतावनी दी थी, लेकिन ईरान के मिसाइल हमलों को रोकने के लिए सऊदी अरब और जॉर्डन सामने आए। सऊदी शाही परिवार ने बताया कि देश के पास ऐसी प्रणाली है जो संदिग्ध मिसाइलों को स्वचालित रूप से रोकती है। इजराइल ने दावा किया कि उसने 99 फीसदी मिसाइलों को मार गिराया था।

सऊदी अरब और जॉर्डन ने की मदद - ईरान से इजराइल की दूरी 1,000 किमी है और मिसाइल एवं ड्रोन को इजराइल पहुंचने के लिए सऊदी अरब और जॉर्डन से होकर जाना पड़ता है। जॉर्डन, जिसने गाजा में हमलों को लेकर लगातार इजराइल की आलोचना की, ने बताया कि इजराइल की तरफ ईरान ने जो मिसाइलें दागीं, उसे जॉर्डन ने मार गिराया था। जॉर्डन ने बताया कि उन्होंने इजराइल और अमेरिका के लड़ाकू विमानों के लिए अपने हवाईक्षेत्र खोल दिए थे। जॉर्डन के एक पूर्व मंत्री ने कहा कि हमारी प्राथमिकता देश और लोगों की रक्षा करना है। उन्होंने कहा, जॉर्डन ने जो किया वह केवल अपने हवाईक्षेत्र को बचाने के लिए किया था। अमेरिकी अधिकारी ने कहा कि ईरान ने कई अरब देशों को हमले की जानकारी दी थी। अधिकारी ने कहा, अरब देशों ने तेहरान के हमले की योजना के बारे में खुफिया जानकारी दी। उन्होंने अपने हवाई क्षेत्र खोल दिए और अपने सुरक्षा बलों को मदद के लिए भेजा।

ज्यादातर मिसाइलों को अमेरिका ने मार गिराया: अमेरिकी सेना का दावा - सऊदी अरब और जॉर्डन के अलावा अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस ने भी ईरान के मिसाइलों को मार गिराने में इजराइल की मदद की। अमेरिकी सेना ने दावा किया कि ईरान के ज्यादातर

मिसाइलों को उन्होंने मार गिराया। बता दें कि ईरान ने शुक्रवार को इजराइल पर करीबन 300 मिसाइलें दागीं। इसपर अमेरिकी सेना ने बताया कि उन्होंने 80 एकतरफा हमला रहित हवाई वाहनों के साथ छह बैलिस्टिक मिसाइलों को मार गिराया। इजराइली सुरक्षा बलों ने बताया कि उन्होंने 25 क्रूज मिसाइलों को इजराइल के बाहर ही रोक दिया था। बताया जा रहा है कि ईरान के अलावा यमन की तरफ से भी मिसाइल दागी गईं थी।

ईरान-इजराइल संकट को देखते हुए फिलहाल भारत नहीं आएंगे अमेरिकी एनएसए सुलिवन, नई तारीखों का एलान जल्द करेंगे

तेल अवीव । अमेरिका के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जैक सुलिवन अगले सप्ताह अब भारत नहीं आएंगे। उन्होंने ईरान-इजराइल संकट को देखते हुए अपनी यात्रा स्थगित कर दी है। बहुआयामी साझेदारी को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध अमेरिका दूतावास के प्रवक्ता ने यह जानकारी दी है। उन्होंने बताया कि एनएसए सुलिवन आईसीईटी वार्षिक समीक्षा जल्द से जल्द आयोजित करने के लिए तत्पर हैं। इसके अलावा, वह भारत के साथ गहरी परिणामी और बहुआयामी साझेदारी को आगे बढ़ाने के लिए व्यक्तिगत रूप से प्रतिबद्ध हैं। भारतीय-अमेरिकी लोगों के हित में काम करना रहेगा जारी प्रवक्ता ने आगे कहा कि इसी तरह राष्ट्रपति बाइडन भी क्वाड नेताओं की अगली बैठक का इंतजार कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय-अमेरिकी लोगों के हित में काम करने के लिए भारत के साथ हमारे प्रयास जारी रहेंगे। साथ ही एक स्वतंत्र, खुले और समृद्ध हिंद-प्रशांत क्षेत्र के लिए काम करना जारी रखेंगे। पहले भी स्थगित कर चुके हैं यात्रा इससे पहले बताया जा रहा था जैक सुलिवन 17 अप्रैल को दिल्ली पहुंचेंगे और 18 अप्रैल को उनकी बैठक होगी। हालांकि अब उनकी यात्रा स्थगित कर दी गई है। ऐसा नहीं है कि यह पहली बार है। सुलिवन पहले इस साल फरवरी में भारत आने वाले थे, लेकिन यक्रेन युद्ध और पश्चिम एशिया में उभरे संकट की वजह से वह दौरा स्थगित हो गया था। मई 2022 में पीएम मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन के बीच आईसीईटी समझौता हुआ था, जिसके तहत दोनों देश उभरती हुई प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग करेंगे। अमेरिका और भारत के बीच मजबूत संबंध बनाने पर सबसे अधिक गर्व वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी से पूछा गया था कि अमेरिका पूर्वी एशिया में संधि सहयोगियों के साथ मजबूत होती सैन्य, रक्षा और सुरक्षा साझेदारी के संदर्भ में भारत के बारे में क्या सोच रहा है ।

बेनजीर की बेटी ने ली नेशनल असेंबली के सदस्य के तौर पर शपथ; पिता ने दी बधाई, भाई ने बताया ऐतिहासिक पल

इस्लामाबाद ।

पाकिस्तान के राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी और पूर्व दिवंगत प्रधानमंत्री बेनजीर भुट्टो की बेटी आसिफा भुट्टो जरदारी ने नेशनल असेंबली के सदस्य के तौर पर शपथ ली। राजनीति के मैदान में नई पारी शुरू करने वाली आसिफा जरदारी को 29 मार्च को एनए 207 शहीद बेनजीराबाद से निर्विरोध चुना गया था। बता दें कि उनके पिता आसिफ अली जरदारी के राष्ट्रपति बनने के बाद से ही यह सीट खाली थी। अपने भाई के साथ नेशनल असेंबली पहुंचीं आसिफा आसिफा अपने भाई और पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) के अध्यक्ष बिलावल भुट्टो के साथ दिन में नेशनल असेंबली पहुंची। नेशनल असेंबली के स्पीकर अयाज सादिक ने उन्हें शपथ दिलाई। इस दौरान पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) से जुड़े एमएनए वहां नारेबाजी कर रहे थे और बाद में ट्रेजरी सांसदों ने वॉकआउट कर लिया। पीटीआई का प्रदर्शन सकरंद पुलिस द्वारा उनके एनए 207 उम्मीदवार गुलाम मुस्तफा रिंड की गिरफ्तारी को लेकर था। पार्टी ने बताया कि रिंड उनके प्रतिनिधि थे, जो उपचुनाव में आसिफा के खिलाफ चुनाव लड़ने वाले थे। राष्ट्रपति जरदारी ने अपनी बेटी को दी बधाई राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर तस्वीरें शेयर करते हुए आसिफा को नई पारी की शुभकामनाएं दी। उन्होंने पोस्ट में लिखा, राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी आसिफा भुट्टो जरदारी को नेशनल असेंबली के सदस्य के तौर शपथ लेने की बधाई देते हैं। पाकिस्तान की नेशनल असेंबली ने भी आसिफा अली जरदारी की शपथ ग्रहन की तस्वीरें शेयर की। उन्होंने एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा, नेशनल असेंबली के नए सदस्य के तौर पर आसिफा भुट्टो जरदारी ने शपथ ली। स्पीकर सरदार अयाज सादिक ने शपथ दिलाई। इस दौरान पीपीपी ने इसे ऐतिहासिक पल बताया। आसिफा की बहन बख्तावर जरदारी ने भी इस पल का जश्न मनाया। पीपीपी के केंद्रीय सूचना सचिव फैजल करीम कुंडी ने भी आसिफा की शपथ को पाकिस्तान के इतिहास का ऐतिहासिक दिन बताया। बता दें कि आसिफा भुट्टो जरदारी ने पाकिस्तान की राजनीति में अहम भूमिका निभाई है। उन्होंने संघर, बेनजीराबाद और नौशहरो फिरोज जिलों में अपने भाई और पार्टी के अन्य उम्मीदवारों के लिए चुनाव अभियान चलाया था।

बाल्टीमोर ब्रिज हादसे मामले में चौथा शव बरामद, पिछले महीने मालवाहक जहाज ने मारी थी टक्कर; एफबीआई कर रही जांच

मेरीलैंड ।

अमेरिका में मेरीलैंड के बाल्टीमोर में पिछले महीने डाली नाम का मालवाहक जहाज पुल से टकरा गया था। इस हादसे में पुल पूरी तरह से ढह गया था। अधिकारियों ने बताया कि पुल ढहने से मारे गए चौथे व्यक्ति का शव उन्हें मिल गया है। ब्रिज रिस्पॉन्स यूनिफाइड कमांड ने खुलासा किया कि बचाव दलों ने रविवार को घटनास्थल से एक शव बरामद किया।

बाल्टीमोर पुल हादसे में चौथा शव बरामद

परिवार के अनुरोध के बाद अधिकारियों ने मृतक के नाम का खुलासा नहीं किया। मेरीलैंड राज्य पुलिस विभाग के अधीक्षक, कर्नल रोलैंड एल. बटलर जूनियर ने कहा, हम मृतकों के लिए शोक जताते हैं। हम लोगों को ढूंढने का अभियान जारी रखेंगे, क्योंकि हम मानते हैं कि खोए हुए लोग किसी न किसी के परिवार होंगे।

एक बयान में बताया गया कि मेरीलैंड पुलिस, एफबीआई और मेरीलैंड परिवहन प्राधिकरण पुलिस ने वाहन के भीतर शव का पता लगाया। की ब्रिज रिस्पॉन्स यूनिफाइड कमांड के अधिकारी ने बताया कि सोमवार को मृतक के परिजनों को सूचित कर दिया गया था। दो सप्ताह पहले दो अन्य मृतकों का शव ट्रक से बरामद किया गया था। बता दें कि पिछले महीने श्रीलंका की तरफ जा रहे मालवाहक जहाज पुल से टकरा गया था। इस हादसे में पुल पर गड्ढों की मरम्मत कर रहे आठ निर्माण श्रमिकों में से छह की नदीं में गिरने से मौत हो गई थी। उस समय मृतकों में से केवल तीन के ही शव मिले थे। तटरक्षक पीड़ितों का शव ढूंढने का प्रयास कर रहे हैं। अमेरिकी मीडिया ने बताया कि एफबीआई ने इस मामले की जांच शुरू कर दी है। एफबीआई ने बताया कि सोमवार को कार्गो जहाज में एजेंट मौजूद थे।

अमेरिका में हिंदुओं पर हमलों को लेकर भारतवंशी सांसद ने जताई चिंता, समुदाय के खिलाफ बड़ी साजिश बताया

न्यूयॉर्क ।

अमेरिका में हिंदू धर्म और हिंदुओं के खिलाफ हमलों में वृद्धि देखने को मिली है। इसे देखते हुए भारतवंशी सांसद श्री थानेदार ने चिंता जताई है। उन्होंने इसे बड़ी साजिश करार दिया है। थानेदार के अलावा भारतीय-अमेरिकी सांसद रो खन्ना, राजा कृष्णमूर्ति, एमी बेरा और प्रमिला जयपाल ने भी हाल ही में न्याय विभाग को एक चिट्ठी लिखकर हिंदू मंदिर पर हुए हमले की जांच की मांग की थी और मामले में जल्द से जल्द न्याय की गुहार लगाई थी।

अमेरिकी सांसद थानेदार ने कहा कि आज मैं अमेरिका में हिंदू धर्म पर हमलों में वृद्धि देख रहा हूं। मैंने देखा कि कई सारी झूठी अफवाहें फैलाई जा रही हैं। एक संस्था हिंदू एक्शन द्वारा आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में उन्होंने कहा कि इन हमलों के आरोपियों के खिलाफ मामला तक दर्ज नहीं किया गया है। उनकी गिरफ्तारी तो दूर की बात है।

उन्होंने आगे कहा कि हमने हाल के कुछ महीनों में इस तरह के हमलों में काफी ज्यादा बढ़ोतरी देखी है। मुझे लगता है कि इस समुदाय के खिलाफ यह बहुत बड़ी साजिश है और इससे निपटने के लिए समुदाय के लोगों को एकजुट होना होगा। एक हिंदू घर में जन्म लेने की वजह से मुझे पता है कि हिंदू का अर्थ क्या होता है हिंदुओं पर हो रहे इन हमलों को देखते हुए मैंने अपने चार सहकर्मियों के साथ मिलकर न्याय विभाग को चिट्ठी लिखने का फैसला किया।

स्थानीय कानून प्रवर्तनों के साथ समन्वय स्थापित करने की जरूरत: सांसद

भारतीय-अमेरिकी सांसद ने कहा कि कैलिफोर्निया में भी इस तरह के हमले देखे गए। न्यूयॉर्क में भी हमले हो रहे हैं। देखा जाए तो पूरे अमेरिका में

ही हिंदू धर्म और हिंदुओं पर हमले किए जा रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा कि स्थानीय कानून प्रवर्तनों ने इन हमलों पर जांच की, लेकिन आगे कुछ भी नहीं हुआ। थानेदार ने कहा कि स्थानीय कानून प्रवर्तनों के साथ समन्वय स्थापित करने की जरूरत है।

श्री थानेदार ने कहा कि इस समय समुदाय के लोगों को एक साथ खड़ा होना होगा और हमें बताना होगा कि हम देश में समानता की मांग कर रहे हैं। हम यहां न्याय की मांग कर रहे हैं और अब हम ऐसी नफरत बर्दाश्त नहीं करेंगे। न्याय विभाग को चिट्ठी लिखने के बाद हम प्रशासन पर दबाव डालेंगे कि हिंदू समुदाय को यहां शांति से रहने का अधिकार हो।

रुश्दी ने खुद पर हुए जानलेवा हमले की घटना को लेकर किया खुलासा, कहा- एक दिन पहले देखा था सपना

वॉशिंगटन ।

ब्रिटिश-अमेरिकी लेखक सलमान रुश्दी ने अपनी नई किताब नाइफ में कई खुलासे किए हैं। यह किताब उनके जीवन पर आधारित है। इसमें उस खौफनाक दिन का भी जिक्र किया गया है, जब उनके छुरा घोंपा गया था। इस घटना में उनकी एक आंख की रोशनी चली गई थी। वहीं इलाज के बारे में भी बताया गया है।

नई किताब नाइफ आज से स्टोर में उपलब्ध होगी। सलमान रुश्दी भारतीय मूल के अमेरिकी लेखक हैं, वह न्यूयॉर्क शहर में रहते हैं।

अगस्त में हुआ हमला - 75 वर्षीय सलमान रुश्दी पर न्यूयॉर्क में साल 2022 की अगस्त में तब हमला किया गया था, तब वो एक प्रोग्राम में हिस्सा ले रहे थे। 24 साल के हादी मातर ने एक लाइव प्रोग्राम के दौरान रुश्दी के गले पर चाकू से कई बार हमला किया था। रुश्दी को एयर लिफ्ट करके एक अस्पताल में भर्ती कराया गया। मातर एक शिया कट्टरपंथी ग्रुप से ताल्लुक रखता था। रुश्दी की गर्दन और पेट पर कई घाव थे। इस घटना में रुश्दी ने अपनी दाहिनी आंख खो दी।

कई देशों में बैन है द सैटेनिक वर्सेज - आपको बता दें कि सलमान रुश्दी ने 1988 में द सैटेनिक वर्सेज नाम की एक किताब लिखी थी, जिसे मुस्लिम ईशनिंदा के रूप में देखते हैं। भारत सहित दुनिया के कई देशों में यह उपन्यास बैन है। इस किताब को लेकर ईरान के तत्कालीन सर्वोच्च नेता अयातुल्ला रुहोल्लाह खुमैनी ने रुश्दी के खिलाफ एक फतवा जारी किया था। न सिर्फ सलमान रुश्दी बल्कि उनकी किताब 'द सैटेनिक वर्सेस के अनुवादकों पर भी हमले होते रहे हैं। द सैटेनिक वर्सेस उपन्यास जापानी ट्रांसलेटर हितोशी इगाराशी की हत्या कर दी गई। जबकि इटैलियन ट्रांसलेटर और नॉर्वे के पब्लिशर पर भी हमले हुए।

मैं भागा क्यों नहीं - रुश्दी ने अपनी किताब में घटना के बारे में कहा, आखिर मैंने लड़ाई क्यों नहीं की मैं भागा क्यों नहीं मैं बस पिनाटा की तरह वहां खड़ा रहा और उसे मुझे मारने दिया। यह बिल्कुल भी नाटकीय या डरावना नहीं लगा। सच्चाई यह है कि सिर्फ संभावित लगा।

हत्यारे ने की थी दोषी नहीं होने की अपील - तेहरान ने रुश्दी पर हमला करने वाले शख्स के साथ किसी भी तरह के संबंध से इनकार किया था। उसका कहना था कि इस घटना के लिए सिर्फ रुश्दी दोषी हैं। उस समय 24 साल के संदिग्ध हमलावर ने हत्या की कोशिश के लिए खुद के दोषी नहीं होने की अपील की थी। कथित हमलावर, जिसके माता-पिता लेबनान से संयुक्त राज्य अमेरिका आए थे, ने कहा था कि उसने द सैटेनिक वर्सेज के सिर्फ दो पेज पढ़े हैं, लेकिन उसका मानना है कि रुश्दी ने इस्लाम पर हमला किया था।

रुश्दी तक हत्यारा कैसे पहुंचा इसे जानने के लिए उत्सुक - अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की वकालत करने वाले ग्रुप पेन अमेरिका की मुख्य कार्यकारी सुजैन नोसेल ने कहा कि उस भयानक दिन के बाद से... हम इस कहानी का इंतजार कर रहे हैं कि आखिरकार सलमान रुश्दी तक हत्यारा कैसे पहुंचा। उन्होंने कहा कि रुश्दी ने अब तक इस कहानी को अपने तक रखा, जिससे हमें उनके साहस पर आश्चर्य होता है।

चाकू मारे जाने का देखा था सपना - किताब के बाजार में उपलब्ध होने से पहले रुश्दी ने बताया कि उन्होंने हमले से दो दिन पहले एक एम्फीथिएटर में चाकू मारे जाने का सपना देखा था और इस कार्यक्रम में शामिल नहीं होने के बारे में भी सोचा था। फिर उनको लगा पागलपन करने की जरूरत नहीं है, यह सिर्फ एक सपना है।

सलमान रुश्दी ने किताब में यह भी लिखा कि उन्हें इस कार्यक्रम के लिए अच्छे खासे रुपये मिलने वाले थे। इससे वह अपने घर की मरम्मत करवाना चाहते थे। इस कार्यक्रम में रुश्दी को उन लेखकों की सुरक्षा के बारे में बात करने के लिए आमंत्रित किया गया था, जिनकी जान को खतरा था। उन्होंने कहा, यह जगह मेरे लिए सुरक्षित नहीं है। रुश्दी ने किताब में अपने बुरे सपने का भी जिक्र किया है।

पांच बार हो चुकी है शादी - रुश्दी का जन्म मुंबई में हुआ था। बहुत ही कम उम्र में वह इंग्लैंड चले गए थे। वह अपने दूसरे उपन्यास मिडनाइट्स चिल्ड्रन (1981) से सुर्खियों में आए। इतना ही नहीं उन्हें स्वतंत्रता के बाद के भारत के चित्रण के लिए ब्रिटेन का प्रतिष्ठित बुकर पुरस्कार भी दिया गया था। लेकिन द सैटेनिक वर्सेज से उनको काफी प्रसिद्धी मिली। रुश्दी एक नास्तिक लेखक हैं। उनकी किताब का अनुवाद करने वाले और उसके प्रकाशकों की हत्या की कोशिश के बाद रुश्दी को ब्रिटेन पुलिस की तरफ से सुरक्षा भी दी गई थी।